REVIEW OF RESEARCH

स्पिनोजा के दर्शन में परमसत् की अवधारणा का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. पूजा मिश्रा

डी. फिल., इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

प्रस्तावना–

परमसत की अवधारणा धर्मदर्शन का प्रमुख विषय है। भारतीय दर्शन में इस अवधारणा पर गहनता से विचार किया गया है, परन्तु पाश्चात्य चिन्तक इस बिन्दु पर कम ही केन्द्रीकृत हुए हैं। इसलिए स्पिनोजा का दर्शन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। इनका सम्पूर्ण दर्शन परमसत की अवधारणा से जोड़कर ही समझा जा सकता है। इसी को द्रव्य, प्रकृति, ईश्वर आदि नामों से भी अभिहित किया जाता है। इनके दर्शन की नींव ही परमसत है। प्रस्तुत शोध आलेख स्पिनोजा के परमसत की व्याख्या और परीक्षा पर ही केन्द्रित है।

मुख्य शब्द– परमसत, द्रव्य, ईश्वर, स्पिनोजा, धर्मदर्शन।

परमसत् वह है जो स्वयं में ही पूर्ण है और प्रत्येक वस्तु का चरम आधार है। स्पिनोजा के अनुसार यही प्रमुख द्रव्य या ईश्वर है। स्पिनोजा का द्रव्य या ईश्वर एक ओर परम्परागत दार्शनिक अवधारणाओं से भिन्न है तो दूसरी ओर धर्मों में प्रतिपादित ईश्वर से भिन्न है। परम्परागत दर्शन में द्रव्य को परिभाषित करते हुए डेकार्ट कहता है कि द्रव्य वह है जिसकी अपनी निजी सत्ता हो और जिसका अस्तित्व किसी दूसरे के अस्तित्व पर निर्भर नहीं है अर्थात् जो आत्मनिर्भर है (A substance is that which exists by itself and the existence of which does not need the existence of anything else.)[1] स्पिनोजा इस परिभाषा में थोड़ा परिवर्तन करता है; उसके अनुसार द्रव्य वह है जिसकी स्वतन्त्र सत्ता है और जो अपने द्वारा समझा भी जाता है अर्थात् जिसके ज्ञान के लिए किसी अन्य पदार्थ के ज्ञान की अपेक्षा न हो (Substance is that which is in itself and is conceived by itself, that is the conception of which does not need to form, from the conception of any other thing.)[2]। स्पिनोजा के अनुसार डेकार्ट स्वतंत्र अस्तित्व को द्रव्य का अनिवार्य लक्षण मानते हुए भी दो प्रकार के द्रव्यों को स्वीकार कर लेता है –

1. निरपेक्ष द्रव्य (Absolute Substance) जिसे वह ईश्वर कहता है तथा

2.सापेक्ष द्रव्य (Relative Substance) जिसे वह चित् एवं अचित् कहता है।

स्पिनोजा के अनुसार यदि डेकार्ट की परिभाषा को माना जाय कि द्रव्य वह है जिसका अस्तित्त्व किसी अन्य के अस्तित्त्व पर निर्भर न हो तो ऐसा द्रव्य दो नहीं हो सकता है। इसीलिए वह सापेक्ष द्रव्य (चित् और अचित्) को द्रव्य की कोटि से उतारकर गुण के स्थान पर रखता है। इस प्रकार चित् और अचित् द्रव्य न होकर ईश्वर के गुण हैं।

यहाँ पर हेगेल यह प्रश्न उठाते हैं कि क्या कोई ऐसी सत्ता सम्भव है जिसका ज्ञान स्वयं ही हो सके? हेगेल के अनुसार द्रव्य–गुण, कारण–कार्य ये सभी सापेक्ष पद हैं। अतः एक के बिना दूसरा सम्भव नहीं है। परन्तु यदि सभी ज्ञान को सापेक्ष मान लिया जाय तो अन्ततः

हमें किसी विषय का ज्ञान नहीं हो सकता। इसीलिए H.A. Wolfson अपनी पुस्तक 'The Philosophy of Spinoza' में लिखते हैं कि स्पिनोजा का ईश्वर साक्षात् ज्ञान का विषय है। वह एक, अद्वितीय, निरपेक्ष, स्वप्रकाश आदि है।[3]

स्पिनोजा परम्परागत धर्मों में प्रतिपादित ईश्वर की अवधारणा का भी खण्डन करते हैं। उनके अनुसार विभिन्न धर्मों में ईश्वर को मूलतः तीन रूपों में माना गया है–

1. ईश्वर स्वतन्त्र है।
2. ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण तथा संकल्प एवं प्रयोजन से भी पूर्ण है।
3. ईश्वर जगत का कारण है।

धर्मों में ईश्वर को स्वतन्त्र माना जाता है, परन्तु यहाँ स्वतन्त्रता का अर्थ मनमौजीपन है। स्पिनोजा के अनुसार, मै भी ईश्वर को स्वतन्त्र मानता हूँ, परन्तु मेरे दर्शन में स्वतंत्रता का अर्थ है, अनिवार्यता। यद्यपि ईश्वर किसी बाह्य शक्ति से नियन्त्रित नहीं हो सकता है, परन्तु इसका अर्थ नहीं है कि वह अनियन्त्रित है। वस्तुतः वह अपने स्वरूप के अनुसार कार्य करने को बाध्य है। यह आत्मनियंत्रण ही उसकी अनिवार्यता है।

धर्मों में ईश्वर को स्वतन्त्र माना जाता है, परन्तु यहाँ स्वतन्त्रता का अर्थ मनमौजीपन है, जबकि स्पिनोजा के अनुसार स्वतन्त्रता का अर्थ है– अनिवार्यता। ईश्वर किसी बाह्य शक्ति से नियन्त्रित नहीं है, परन्तु इसका अर्थ नहीं है कि वह अनियन्त्रित है, बल्कि वह अपने स्वरूप के अनुसार कार्य करने को बाध्य है। यह आत्मनियंत्रण ही उसकी अनिवार्यता है।

धर्मों में ईश्वर को व्यक्तित्वपूर्ण तथा संकल्प एवं प्रयोजन से पूर्ण माना जाता है, परन्तु स्पिनोजा के अनुसार यह सभी सीमित सत्ता के गुण हैं। अतः उनके अनुसार ईश्वर निर्वैयक्तिक है तथा उसमें संकल्प एवं प्रयोजन का भी सर्वथा अभाव पाया जाता है। स्पिनोजा मानते हैं कि जब हम ईश्वर में किसी भी गुण का विधान करते हैं तो अन्य सभी गुणों का निषेध कर देते हैं, क्योंकि 'प्रत्येक निर्धारण निषेधीकरण होता है' (Every determination is negation.)[4] स्पिनोजा के अनुसार जब हम ईश्वर में गुणों का आरोपण करते हैं तो केवल अपने बिम्बों का ही प्रक्षेपण करते हैं। इस रूप में ईश्वर सीमित हो जाता है। इसीलिए वे ईश्वर को निर्गुण, निराकार एवं अनिर्वचनीय कहते हैं। यहाँ निर्गुण का अर्थ गुणरहित होना नहीं है, बल्कि सीमित गुणों के अभव से है अर्थात् ईश्वर किसी अभाव का द्योतक न होकर 'अभावों के अभाव'[5] का द्योतक है।

धर्मों में ईश्वर को जगत का स्रष्टा एवं कारण माना गया है। स्रष्टा इस रूप में माना गया है कि ईश्वर जगत की रचना करके उसके परे चला जाता है। इस प्रकार यहाँ ईश्वर को दूरस्थ कारण के रूप में माना जाता है। स्पिनोजा भी ईश्वर को जगत का कारण मानते हैं। परन्तु धर्मों के अर्थ में नहीं। धर्मों में ईश्वर को दूरस्थ कारण के रूप में स्वीकार किया गया है, जबकि स्पिनोजा ईश्वर को 'अन्तर्यामी कारण' या 'तार्किक कारण' के रूप में मानते हैं। स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर उस अर्थ में जगत का कारण नहीं है जिस अर्थ में पूर्ववर्ती घटना, परवर्ती घटना का कारण होती है। यहाँ कारणता का तात्पर्य कार्यों के केवल आधार या अधिष्ठान से है। स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर जगत का तार्किक कारण है। तार्किक कारणता का अर्थ यह है कि यहाँ कारण एवं कार्य में अभेद माना जाता है। जिस प्रकार त्रिभुज की परिभाषा में यह निहित है कि उसमें तीन कोण होते हैं उसी प्रकार ईश्वर के स्वरूप से ही जगत का तार्किक निगमन हो जाता है। स्पष्टतः ईश्वर एवं जगत के बीच कोई कारण–कार्य सम्बन्ध नहीं है बल्कि तार्किक सम्बन्ध (Logical relation) है। इस प्रकार ईश्वर एवं विश्व दोनों में अभेद है। अस्तु, स्पिनोजा कहता है कि ईश्वर विश्व है और विश्व ईश्वर है (All is God and God is all.)[6] इस प्रकार स्पिनोजा का ईश्वर या द्रव्य धर्मों में प्रतिपादित ईश्वर की अवधारणा से भी भिन्न है।

उपर्युक्त मतों के समीक्षा/खण्डन के उपरान्त स्पिनोजा अपने ईश्वर या द्रव्य सम्बन्धी सिद्धान्त की स्थापना करता है। स्पिनोजा के दर्शन में ईश्वर विचार या द्रव्य विचार सबसे प्रमुख विचार है। उसके दर्शन का प्रारम्भ ही अद्वितीय और निरपेक्ष द्रव्य की परिभाषा से होता है। वस्तुतः स्पिनोजा का समस्त दार्शनिक सिद्धान्त द्रव्य की परिभाषा से ही निगमित होता है। स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर ही परमद्रव्य है जिससे सम्पूर्ण सृष्टि

उदभूत है। अपने ग्रन्थ `Ethica' में स्पिनोजा द्रव्य को परिभाषित करते हुए कहता है कि 'द्रव्य वह है जो अपने आप में है और जो अपने द्वारा ही समझा जाता है' (Substance is that which is in itself and is conceived through itself)[7] अर्थात् इसके ज्ञान के लिए किसी अन्य वस्तु के ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती है (the conception of which does not need the conception of another thing in order to its formation). स्पिनोजा के अनुसार ''जो अपने आप में है'' (that which is in itself) का भाव द्रव्य की स्वतन्त्रता को सूचित करता है और ''जो अपने द्वारा ही समझा जाता है'' (that which is conceived through itself) का भाव न केवल स्वतन्त्रता को सूचित करता है, बल्कि इस पर भी बल देता है कि द्रव्य आत्मनिर्भर है और यह स्वयं अपना कारण है अर्थात् स्वयंभू है।[8]

स्पिनोजा द्वारा दी गयी द्रव्य की उपर्युक्त परिभाषा से द्रव्य की निम्नलिखित विशेषताएँ उभरकर सामने आती हैं–

(1) तत्त्वमीमांसीय एवं ज्ञानमीमांसीय दृष्टिकोण से द्रव्य किसी पर निर्भर नहीं है। उल्लेखनीय है कि डेकार्ट ने ईश्वर के ज्ञान को आत्मा के ज्ञान पर निर्भर माना था जबकि स्पिनोजा ने ईश्वर या द्रव्य के ज्ञान को सार्वभौम और स्वतः प्रमाण माना।[9]

(2) द्रव्य स्वयंभू (Self Caused) है। वह स्वयं अपना कारण है पर उसका कारण कोई नहीं है। यदि द्रव्य का भी कारण माना जाय तो वह स्वतन्त्र और निरपेक्ष नहीं रह जाएगा और साथ ही उसमें अनवस्था–दोष की भी प्राप्ति होगी। लैटिन भाषा में इसे `Causa-sui' कहा जाता है।[10]

(3) द्रव्य निरपेक्ष (Absolute) है क्योंकि अपने अस्तित्व और ज्ञान के लिए वह किसी अन्य सत्ता पर आश्रित नहीं है।

(4) द्रव्य एक और अद्वितीय (Non-dual) है। उल्लेखनीय है कि डेकार्ट ने द्रव्यों का द्वैत माना था। स्पिनोजा के अनुसार यदि एक से अधिक द्रव्य को माना गया तो फिर वे एक दूसरे को सीमित कर देंगे और उनमें पारस्परिक निर्भरता का भाव उत्पन्न हो जाएगा। अतः द्रव्य को स्वतन्त्र होने के लिए एक एवं अद्वितीय होना आवश्यक है। यहाँ एक का आशय संख्यागत एक से न होकर एकत्व (Unity) से है।

(5) द्रव्य या ईश्वर पूर्ण है। पूर्ण होने के कारण द्रव्य या ईश्वर नित्य एवं शाश्वत भी है।

(6) द्रव्य या ईश्वर अपरिमित (Infinite)[11] है। द्रव्य निरपेक्ष और अद्वितीय है। अतः उसे परिच्छिन्न अथवा सीमित करने के लिए किसी अन्य सत्ता का अ ाव है। इसीलिए द्रव्य को अनन्त (Ens absolute infinitum)[12] कहा जाता है।

(7) द्रव्य स्वतन्त्र है[13] यहाँ स्वतन्त्रता का आशय स्वच्छन्दता नहीं है। स्वतन्त्रता का आशय आत्मनिर्धारण से है। स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य ही ईश्वर है और वह अपने स्वरूप के अनुसार कार्य करता है। वह किसी बाह्य सत्ता द्वारा निर्धारित नहीं है। ईश्वर अपने तार्किक स्वरूप के अनुसार ही कार्य करता है।

(8) द्रव्य या ईश्वर शाश्वत (Eternal) और अपरिवर्तनीय (Unchangeable) है।[14]

(9) द्रव्य अन्तर्यामी (Immanent)[15] है। स्पिनोजा का द्रव्य या ईश्वर संसार की प्रत्येक वस्तु में विराजमान है। चैतन्य और विस्तार के समानान्तर गुण होने के कारण ईश्वर और जगत में अभेद सम्बन्ध पाया जाता है। ईश्वर जगत में अन्तर्यामी है पर वह जगत से अतीत नहीं है।

(10) द्रव्य निर्गुण एवं निराकार है। यहाँ निर्गुण का आशय गुणों के अभाव से नहीं है। द्रव्य में अनन्त गुण हैं और वे असीमित मात्रा में है। हम ऐसे किसी भी गुण की कल्पना नहीं कर सकते। मनुष्य केवल सीमित गुणों की ही कल्पना कर सकता है जो अनेक वस्तुओं पर लागू होता है। द्रव्य में ऐसे सीमित गुणों का अभाव है। इसी संदर्भ में यहाँ द्रव्य को निर्गुण कहा गया है। स्पिनोजा के अनुसार प्रत्येक गुण निषेधात्मक होता है। द्रव्य पर ऐसे किसी गुण का आरोपण करने पर द्रव्य अनेक गुणों से रहित हो जाएगा। यही कारण है कि स्पिनोजा द्रव्य पर किसी गुण के आरोपण की बात को स्वीकार नहीं करते। इस सन्दर्भ में उनका स्पष्ट कथन है कि 'प्रत्येक निर्वचन निषेधात्मक होता है (Every determination is negation)[16]

(11) ईश्वर और प्रकृति के बीच सम्बन्ध को स्पष्ट करने के लिए स्पिनोजा दो पदों का प्रयोग करता है। कारण प्रकृति (Natura Naturans)[17] और कार्य प्रकृति (Natura Naturata)[18]। Natura Naturans एक लैटिन पद है जिसका अर्थ कारण प्रकृति या सक्रिय/सृजमान प्रकृति है। Naturansपद `Natura' का वर्तमान कृदन्त है और Natura Naturans प्रकृति के स्वयंभू क्रिया–कलाप (Self Causing activity of Nature) से सम्बन्धित है।[19] Natura Naturans (कारण प्रकृति) को परिभाषित करते हुए स्पिनोजा कहता है कि Natura Naturans या कारण प्रकृति वह है जो स्वयं में है और स्वयं के द्वारा ही जाना जाता है अथवा द्रव्य के वे गुण जो शाश्वत् और असीमित सार को अभिव्यक्त करते हैं और जहाँ तक कि उसे स्वतन्त्र कारण के रूप में जाना जाता है, वह ईश्वर है। (By Natura naturans we must understand that which is in itself and conceived through itself, Or those, attributes of substance which express eternal and infinite essence, that is God in so far as he is considered as a free cause.)[20]

द्रव्य की उपर्युक्त विशेषताओं का अवलोकन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि स्पिनोजीय द्रव्य स्वयंभू, स्वयं के द्वारा जाना जाने वाला और स्वतः स्पष्ट है। द्रव्य की ये विशेषताएँ स्पिनोजा के सैद्धान्तिक बुद्धिवाद (Metaphysical Rationalism) से अनिवार्यतः सम्बन्धित है। सैद्धान्तिक बुद्धिवाद यह दावा करता है कि प्रत्येक वस्तु का कारण होता है (Everything has a cause or reason) हम देखते हैं कि स्पिनोजा भी द्रव्य को कुछ ऐसा ही समझता है जो स्वयंभू (Self Caused) और स्वयं व्याख्येय (Self explained) है। इसके अलावा स्पिनोजा मानते हैं कि सैद्धान्तिक बुद्धिवादी यह आवश्यक रूप से मानता है कि कम से कम या अधिक से अधिक एक द्रव्य की सत्ता या अस्तित्व है और यह द्रव्य अनिवार्य रूप से अस्तित्ववान है और निरपेक्षतः अपरिच्छिन्न (Absolutely infinite) है, अतः यह द्रव्य ईश्वर है। स्पिनोजा के ईश्वर की परिभाषा से भी यही सिद्ध होता है कि ईश्वर एक निरपेक्षतः अपरिमित द्रव्य है (God is an absolutely infinite Substance) और अन्य सभी इसी निरपेक्ष द्रव्य (ईश्वर) में अन्तर्निहित है, इसी (ईश्वर) के द्वारा व्याख्येय है, यही (ईश्वर) कारण रूप है तथा इसी द्रव्य (ईश्वर) के द्वारा जाना जाता है। अतः स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर ही वह सत्ता है जो प्रत्येक के होने का मूल कारण है (Cause of reason for everything) है।

यहाँ यह ध्यान रखने योग्य है कि स्पिनोजा ने द्रव्य (Sustance) और ईश्वर (God) शब्द का प्रयोग भिन्न अर्थ में नहीं किया, बल्कि उनका प्रयोग समानार्थी रूप में किया है। अतः उसने द्रव्य के लिए वैयक्तिक और निर्वैयक्तिक (impersonal) दोनों पद का प्रयोग किया है।[21] स्पिनोजा के ईश्वर की अवधारणा को देखते हुए यह तथ्य ध्यान रखने योग्य है।

जैसा हम देख सकते हैं कि स्पिनोजा के द्रव्य की परिभाषा के दो भाग हैं– ''वह जो अपने में ही निहित है'' (That which exists in self)[22] और ''वह जो स्वयं के द्वारा जाना जा सकता है'' (That which can be conceived through itself)[23] पहला भाग अस्तित्व की स्वतन्त्रता का समर्थन करता है तथा दूसरा भाग ज्ञान की स्वतन्त्रता का समर्थन करता है। इसका अर्थ यह है कि परिभाषा का पहला भाग यह सूचित करता है कि द्रव्य अथवा ईश्वर अकारण (Uncaused) तथा शाश्वत (Eternal) हैं; दूसरा भाग सूचित करता है कि यह (ईश्वर) एक है, असीमित है जिसे केवल स्वयं के द्वारा ही जाना जा सकता है, किसी अन्य के साथ सम्बन्धित करके नहीं जाना जा सकता है। ईश्वर या द्रव्य, जो स्वरूपतः अनन्त है, अनिवार्यतः अनिर्धारित (Indeterminate) है। क्योंकि यदि इसे यह यह कहा जाता है कि 'यह' या तो 'यह' (This) या 'वह' (That) विशिष्ट इकाई (Particular entity) है, या इसे 'यह' और 'वह' पद के रूप में वर्णित करने पर गुण इसे सीमित कर देंगे जो कि एक गलत अवधारणा है। इस अर्थ में, स्पिनोजा कहता है कि सभी निर्वचन निषेधात्मक होता है (All determination is negation)[24] और इसलिए द्रव्य अथवा ईश्वर अपने अस्तित्व एवं गुणों के रूप में अनिर्धारित है (Substance or God is indeterminate in terms of its

existence and attributes)। दुबारा यह इस बात का समर्थन करता है कि द्रव्य या ईश्वर का अस्तित्व स्वतः सिद्ध है, उसके अस्तित्व के लिए किसी प्रमाणीकरण की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि केवल उसे जो निर्णीत या निर्धारित (determinate) है, प्रमाणीकरण की आवश्यकता है। स्पिनोजा की दृष्टि में ईश्वर ही एक, अद्वैत, अनन्त, निरपेक्ष, पूर्णद्रव्य है। चित्–अचित् सभी ईश्वर के गुण है। स्वयं अकारण होते हुए भी यह समस्त सृष्टि का कारण है। सम्पूर्ण सृष्टि ईश्वर प्रसूत है अर्थात् ईश्वर ही सृष्टि का सर्वप्रथम कारण है। ईश्वर सृष्टि में अन्तर्यामी है। सृष्टि उनके बाहर नहीं, उनके भीतर है।

ईश्वर अनादि, अनन्त, शाश्वत तथा अद्वैत सत्ता है इसलिए सभी वस्तुएँ ईश्वर पर आधारित है। वास्तव में देखा जाय तो ईश्वर ही एक निरपेक्ष, परम द्रव्य है और उसको छोड़कर कोई दूसरी सत्ता नहीं है। अतः स ी वस्तुएँ ईश्वर ही हैं। इसीलिए प्रकृति की भी कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं है। जिस प्रकार से वर्ग, त्रि ुज का तत्त्व दिक् है उसी प्रकार से सभी वस्तुओं का आधार या मूल हेतु ईश्वर है। स्पिनोजा ईश्वर में प्रकृति को नहीं, वरन् प्रकृति में ईश्वर ही को पाते हैं। इसीलिए स्पिनोजा को 'ईश्वर मदमस्त' भी कहा जाता है।[25]

स्पिनोजा के ईश्वर या द्रव्य सम्बन्धी विचार का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि वह (स्पिनोजा) ईश्वर को एकमात्र सत्ता मानते हुए भी जगत की बहुलता को असत् नहीं कहता है, बल्कि पर्याय के आधार पर विविधता या बहुलता को व्याख्यायित करने का प्रयास करता है।

दार्शनिक दृष्टि से स्पिनोजावाद, असंतोषजनक हो सकता है, पर धार्मिक दृष्टि से इसे उच्चकोटि का धर्म–दर्शन कहा गया है। स्पिनोजा के अनुसार केवल ईश्वर ही सत्य है और सभी घटनाओं को, चाहे वह सुखप्रद हो या दुःखप्रद हो, ईश्वर का भेंट समझकर ग्रहण कर लेना चाहिए। ईश्वर में मन लगाने पर जीवन के अंदर स्थिरता आ जाती है।

स्पिनोजा के दर्शन को सर्वेश्वरवाद कहा जाता है, क्योंकि सर्वेश्वरवाद के अनुसार स ी घटनाएँ ईश्वर से संचालित होती है और वही एक सत्ता सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त रहती है। इस सर्वेश्वरवाद (अर्थात् सब ईश्वर ही है) में पूजा–पाठ का स्थान नहीं है, क्योंकि भक्त और भगवान् दोनों एक ही तादात्म्य सत्ता में रहकर उनमें पुजारी और देवता का भेद नहीं किया जा सकता है। पर रहस्यवाद की दृष्टि से इसे धार्मिक अनुभूति की पराकाष्ठा माना गया है।

स्पिनोजा ने अपने ईश्वर सम्बन्धी अवधारणा के अन्तर्गत ईश्वर को स्वतः निर्गुण और अनिर्वचनीय कहा है। उसके अनुसार ईश्वर का साक्षात्कार बुद्धि से न होकर निर्विकल्प स्वानुभूति से होता है। यह निर्विकल्प स्वानुभूति विशुद्ध अद्वैत है, काल्पनिक या कोरा अद्वैत नहीं। स्पिनोजा के इस मत से असंतुष्ट होते हुए भी हेगल को विवश होकर यह कहना पड़ा कि– 'दार्शनिक होने के लिए पहले स्पिनोजा का शिष्य बनना पड़ेगा।' (The Fact is that Spinoza is made a testing point in modern philosophy, so that it may really be said : You are either a spinozist or not a philosopher at all.)[26]

REFERENCES

1. Masih,Yakub (2010) : *A Critical History of Western Philosophy*, Motilal Banarsidass Publishers, New Delhi, p. 225.
2. Hart, Alan (1983): *Spinoza's Ethics; A Platonic Commentary*, Leiden, The Neitherlands. p.g. 16
3. Wolfson, H.A. (1983) : *The Philosophy of spinoza : Unfolding the Latent process of His Reasoning*, Harvard University Press, USA.
4. Pandey, Rishi Kant (2016); *Dharma – Darshan, Pearson India Education services Private Limited, New Delhi, P 103.*
5. Ibid, P. 103
6. Ibid, P. 103
7. Hartshorne, Charles and Reese, William L. (1953) : *Philosophers Speak of God*, The University of Chicago Press, Chicago p. 191
8. Hart, Alan (1983) : *Spinoza's Ethics; A Platonic Commentary*, Leiden, the Netherland p. 16

9. Srinivasan, G. (1981) : *God in Western Thought*, Deep & Deep Publication, New Delhi, p. 25
10. Thilly, Frank (1985) : *A History of Philosophy*, Central Publishing House, Allahabad, p. 214
11. Wright, William Kelley : *A History of Modern Philosophy*, The Macmillan Company, New York, p. 100
12. Srivastava, J. Sahai (2006); *Pashchatya Darshan Ki Darshnik Pravrittiyan*, Abhivyankti Publication, Allahabad, p. 31.
13. Jarrett, Charles E. (2007) : *Spinoza : A Guide for the Perplexed*, Continuum International Publishing Group, New York p. 48.
14. Wright, William Kelley : *A History of Modern Philosophy*, The Macmillan Company, New york, p. 102
15. Ibid, p.100
16. Upadhyaya, H.S. (2004) : *Pashchatya Darshan Ka Udbhava aur Vikas,* Anusheelan Publication, Allahabad, p. 139
17. Jarrett, Charles E. (2007) : *Spinoza : A Guide for the Perplexed,* Continuum International Publishing Group, p. 57
18. Ibid, P.57
19. ``Philosophy of Baruch Spinoza (1632-1677)'' in wikipedia, the free encyclopedia, available at https : //en.m.wikipedia.org
20. Wilbur, James B. (*editor*) (1976) : *Spinoza's Metaphysics : Essay in Critical Appreciation, Van* Gorcum, Assen, The Neitherlands, p. 73
21. Srinivasan, G. (1981) : *God in Western Thought*, Deeps Deep Publications, New Delhi, p. 26
22. Ibid, P. 26
23. Ibid, P. 26
24. Upadhayaya, H.S. (2004) : *Pashchatya Darshana Ka Udbhava aur Vikas*, Anusheelan Publicaion, Allahabad, p. 139
25. Mashin, Yakub (2010 : *A Critical History of Western Philosophy, Motilal Banarsidass Publishers,* New Delhi, P. 215
26. Hegel, G.W.F. (1896) : Lectures on the History of Philosophy, Vol. 3, Chapter I; The Metaphysics of the Understanding 52 : Spinoza, P. 283.

डॉ. पूजा मिश्रा
डी. फिल. , इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र.

LBP PUBLICATION